

क. भूमिका:

❖ सांपों की लड़ाई (निर्गमन 7:8-12)

- परमेश्वर ने कहा कि इस्राएल का छुटकारा एक युद्ध था जो उसने स्वयं मिस्र के देवताओं के विरुद्ध लड़ा था। (निर्गमन 12:12; गिनती 33:4)।
- अपने मुकुट पर, जो उसकी शक्ति का प्रतीक था, फिरौन ने एक सुंदर नाग पहना था जो देवी उदयेत का प्रतिनिधित्व करता था। लाठी को साँप में बदलकर, परमेश्वर सीधे इस देवी को चुनौती दे रहा था (निर्गमन 7:10)। क्या वह फिरौन की रक्षा कर पाएगी?
- शैतान ने जादूगरों के ज़रिए चमत्कार की नकल की (निर्गमन 7:11)। लेकिन वह जीवन नहीं बना सकता; उसके साँप सिर्फ साँपों जैसे दिखते थे। हालाँकि, परमेश्वर ने एक जीवित साँप बनाया था, जो निर्जीव प्राणियों को खा सकता था (निर्गमन 7:12)।
- इस प्रकार परमेश्वर ने दिखाया कि मिस्र के देवता नहीं, बल्कि वह ही सर्वोच्च सामर्थ्य और अधिकार रखता है।

❖ एक कठोर हृदय (निर्गमन 7:13)

- निर्गमन की पुस्तक में 9 बार कहा गया है कि परमेश्वर ने फिरौन के हृदय को कठोर कर दिया (निर्गमन 4:21; 7:3; 9:12; 10:1; 10:20; 10:27; 11:10; 14:4; 14:8), और 9 बार फिर कहा गया है कि फिरौन ने स्वयं अपना हृदय कठोर कर दिया (निर्गमन 7:13; 7:14; 7:22; 8:15; 8:19; 8:32; 9:7; 9:34; 9:35)।
- बराबर! तो फिरौन का हृदय किसने कठोर कर दिया था?
- पहली पाँच विपत्तियों के बाद, यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि फिरौन ने अपना हृदय कठोर कर लिया। अर्थात्, उसने इस्राएल को स्वतंत्र करने के पवित्र आत्मा के आह्वान पर सकारात्मक प्रतिक्रिया देने से इनकार कर दिया।
- छठी विपत्ति के बाद, परमेश्वर ने उसका हृदय कठोर कर दिया (निर्गमन 9:12)। फिरौन ने स्पष्ट रूप से पश्चाताप की दहलीज पार कर ली थी। हालाँकि, सातवीं विपत्ति में, उसे एक और मौका दिया गया, लेकिन उसने फिर से अपना हृदय कठोर कर लिया (निर्गमन 9:34-35)।
- तब से, उसका भाग्य तय हो गया था। परमेश्वर ने फिरौन का हृदय कठोर कर दिया था क्योंकि उसने पश्चाताप न करने का दृढ़ निश्चय कर लिया था।

ख. विपत्तियाँ:

❖ तीन हल्की विपत्तियाँ (निर्गमन 7:14-8:19)

- पहली विपत्ति (हल्की): लहू। प्रभावित करता है: हापी, नील नदी का देवता।
 - ✓ नील नदी ने अपनी बाढ़ से मिस्र को जीवन दिया। लेकिन पानी के स्रोत किसने बनाए? जादूगरों ने पानी को बदलने की नकल की, लेकिन वे इसे उलट नहीं पाए।
- दूसरी विपत्ति (हल्की): मेंढक। प्रभावित करता है: हेकेट, मेंढकों का देवता
 - ✓ जादूगरों ने फिर से विपत्ति की नकल की, लेकिन वे इसे रोकने में असमर्थ रहे।
- तीसरी विपत्ति (हल्की): कुटकियाँ। प्रभावित करता है: गेब, पृथ्वी का देवता
 - ✓ भूमि की मिट्टी से जीवन की सृष्टि (उत्पत्ति 1:24)? विपत्तियों की उत्पत्ति के बारे में अब कोई संदेह नहीं था: “यह तो परमेश्वर के हाथ का काम है।” (निर्गमन 8:19)। और जादूगर अंततः चुप हो गए।

❖ तीन गंभीर विपत्तियाँ (निर्गमन 8:20-9:12)

- चौथी विपत्ति (गंभीर): डाँस। प्रभावित करता है: उआचिट, दलदल की देवी
 - ✓ पहली बार, इस्राएलियों को विपत्ति से बचाया गया। इससे फिरौन को समझौता करने के लिए मजबूर होना पड़ा, लेकिन वह अंततः अपने वादे को पूरा करने में विफल रहा।
- पांचवीं विपत्ति (गंभीर): मवेशियों की मौत। प्रभावित करता है: खनम, सृष्टिकर्ता देवता
 - ✓ कई देवताओं के सिर जानवरों के थे, इसलिए इस विपत्ति ने उनमें से अधिकांश को अपमानित किया।
- छठी विपत्ति (गंभीर): फफोले और फोड़े। प्रभावित करता है: सेखमेत, उपचार की देवी
 - ✓ जादूगर भी खुद को ठीक नहीं कर सकते थे (निर्गमन 9:11)। फिरौन को विपत्तियों के स्रोत के बारे में कोई संदेह नहीं था। लेकिन उसने परमेश्वर के सामने झुकने से इनकार करने का फैसला किया, और परमेश्वर ने उसे उसके विद्रोह का फल काटने दिया (निर्गमन 9:12)।

❖ तीन विनाशकारी विपत्तियाँ (निर्गमन 9:13-10:29)

- सातवीं विपत्ति (विनाशकारी): ओलावृष्टि। प्रभावित करता है: नट, आकाश की देवी; शेठ, तूफानों का देवता
 - ✓ मिस्रियों के विश्वास की परीक्षा हुई। जिन लोगों ने विश्वास किया, उन्होंने अपने सेवकों और पशुओं की जान बचाई। (निर्गमन 9:20)। फिरौन ने विश्वास नहीं किया, और यद्यपि उसने अपने पाप को स्वीकार किया, उसकी स्वीकारोक्ति ईमानदार नहीं था। (निर्गमन 9:27-30)।
- आठवीं विपत्ति (विनाशकारी): टिड्डियाँ। प्रभावित करता है: नेपर, अनाज का देवता
 - ✓ मिस्र के तबाह हो जाने पर, मिस्रियों ने स्वयं फिरौन से इस्राएलियों को जाने देने की विनती की। (निर्गमन 10:7)
- नौवीं विपत्ति (विनाशकारी): अंधकार। प्रभावित करता है: रा, सूर्य देवता
 - ✓ मिस्र में तीन दिन तक जीवन ठहर गया (गोशेन को छोड़कर)। परमेश्वर ने चिंतन के लिए समय दिया, जिसका फिरौन पूरा फायदा उठाने में विफल रहा।